ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

पंजाबी संगीतकारों और विद्वानों का संगीत के प्रकाशन में योगदान

रमनदीप कौर

शोधार्थी पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 20 Oct 2018

Keywords
भारतीय संस्कृति गुरमति संगीत, सूफी संगीत

ABSTRACT

पंजाब भारत का एक खुशहाल प्रान्त है जिसकी संस्कृति को भारतीय संस्कृति का मूल आधार माना जाता है। पंजाब प्रान्त ने आरम्भ से ही भारतीय संस्कृति ओर कलाओं में प्रतिनिधित्व किया है। कलाओं में संगीत कला के प्रसार ओर प्रचार में पंजाब ओर पंजाबी संगीतकार विद्वानों का योगदान सराहनीय रहा हैं। पंजाब की धरती ने भारतीय संगीत को अनेक कलाकार संगीतकार दिए जिन्होंने भारतीय संगीत की विभिन्न धाराओं (लोक संगीत, शास्त्रीय संगीत, उप–शास्त्रीय संगीत, गुरमति संगीत, सूफी संगीत ओर सुगम संगीत आदि) को प्रसारित करने में अहम योगदान दिया। इसमें कोई संदेह नहीं कि इन संगीतकारों ने संगीत के क्रियात्मक पक्ष को अधिक प्रसारित किया। देखा जाए तो सैद्वातिंक पक्ष के अभाव से किसी भी कला या संस्कृति के बिखरने का डर रहता है। आरम्भ से ही पंजाबी संगीतकार संगीत के सैद्वान्तिक पक्ष को प्रचारित करने में कम सफल रहे थे यही कारण रहा कि पंजाबी संगीतकारों के भारतीय संगीत को योगदान को गैर–पंजाबी लेखकों ने उस तरह नहीं दर्शाया जितना दर्शाया जाना चाहिए था। इस शोध पत्र में पंजाब के संगीतकार विद्वानों द्वारा भारतीय संगीत के प्रकाशन क्षेत्र में दिए गए योगदान पर विशेष चर्चा की गई है।

भारतीय परम्परा में संगीत को गुरुमुखी विद्या का स्थान प्राप्त है। प्रारम्भ से ही संगीत की शिक्षा गुरु–शिष्य परम्परा के अनुसार दी जाती रही है जिसमें संगीत का क्रियात्मक पक्ष प्रबल रहा है। निःसंदेह, संगीत एक क्रियात्मक कला है, परन्तु सैद्धान्तिक पक्ष के बिना भी संगीत की पहचान के आलोप होने का खतरा बना रहता है। संगीत के प्रति ऐसी अवधारणा प्रचलित रही है कि सैद्धान्तिक एवं क्रियात्मक दोनों क्षेत्र अलग–अलग हैं और इन दोनों क्षेत्रों के विद्वान् भी अलग–अलग रहे हैं। इस धारणा को बदलने के लिए पंडित विष्णु नारायण भातखण्डे और विष्णु दिगम्बर पुलुस्कर ने गुरु–शिष्य परम्परा के अंतर्गत दी जाने वाली संगीत की 'तालीम' को संगीत 'शिक्षा' के रुप में परिवर्तित किया जिससे संगीत की संस्थागत शिक्षण प्रणाली का शुभारम्भ हुआ। परिणामस्वरुप संगीत की शिक्षण प्रणाली में परिवर्तन आना स्वाभाविक था। इससे संगीत शिक्षण में जहाँ अनेक सुविधाएँ प्राप्त हुई, वहीं साथ ही समय सीमा निर्धारित होने के कारण सामूहिक शिक्षण पद्धति का प्रचलन हुआ। जिस कारण गुणात्मकता का स्थान गिनात्मक्ता ने ले लिया जो कि समय के साथ एक बड़ी चुनौती बनकर उभरा। तब पंडित पुलुस्कर और भातखण्डे जैसे विद्वानों ने इस चुनौती को स्वीकार करते हुए अपने ज्ञान को पुस्तकों के रूप में प्रकाशित करके संगीत जिज्ञासुओं और विद्यार्थियों को बहुमूल्य देन दी। इसके बाद संगीत विषय पर हिन्दी और अंग्रेजी आदि भाषाओं के साथ–साथ क्षेत्रिय भाषाओं में भी पुस्तकों की रचना की गई तांकि संगीत की शिक्षा संस्थागत शिक्षण प्रणाली के अन्तर्गत सुगमता से प्रवाहित हो सके। प्राचीन और मध्यकाल में संस्कृत, फारसी, उर्दू, बृज, आधुनिक काल में अंग्रेजी और हिन्दी भाषा में पुस्तकों का प्रकाशन हुआ, वहीं पंजाबी भाषाई संगीत प्रकाशनों की शुरुआत 19वीं सदी के अंत में आरम्भ हुई जिनका प्रकाशित रूप बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ तक सामने आने लगा। पंजाबी संगीतकारों और विद्वानों द्वारा संगीत प्रकाशनाओं की बात करें तो शुरुआती प्रकाशनाएँ गुरमत संगीत विद्या के अनुकूल प्रकाशित हुई। इससे पहले किसी भी पंजाबी संगीतकार विद्वान द्वारा कोई भी प्रकाशित कार्य नहीं किया गया जिसमें पंजाबी संगीतकारों के भारतीय संगीत परम्परा में योगदान का उल्लेख किया गया हो। डॉ. गुरनाम सिंह के अनुसार–

''भारतीय संगीत के इतिहास पर अध्ययन करते हुए अभी तक किसी भी इतिहासकार ने नियमपूर्वक संतुलित विधि नहीं अपनायी। इस इतिहास में पंजाबियों के योगदान को नज़रअंदाज किया गया है।''[1]

निःसंदेह पंजाबियों ने भारतीय संगीत परम्परा को क्रियात्मक रूप से अधिक प्रफुल्लित किया जबकि सैद्धांतिक पक्ष की सुरक्षा में कमज़ोर रहे। यही कारण रहा कि गैर पंजाबी संगीत विद्वान् लेखकों ने पंजाबियों के भारतीय संगीत में योगदान के लिए उन्हें वो स्थान नहीं दिया, जो देना चाहिए था। समय बीतने के साथ शिक्षण संस्थानों में संगीत के एक स्वतंत्र विषय के रुप में आरम्भ होने के बाद भारतीय संगीत के पंजाबी संगीतकार विद्वान् लेखकों ने भी इस अभाव को महसूस करते हुए पुस्तकों की रचना करनी आरम्भ की और इसके बाद ही पंजाबियों द्वारा भारतीय संगीत में योगदान को उभार के पुस्तकों, शोध कार्यों औ शोध पत्रों के रुप में प्रकाशित किया गया, जो निरंतर जारी है। पंजाब के संगीत की सैद्धांतिक और क्रियात्मक सामग्री को प्रकाशित करने में भाषा विभाग, पंजाब, पंजाब स्टेट यूनिवर्सिटी टैक्स्ट बुक बोर्ड, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, अमृतसर साहिब, चीफ खालसा दीवान अमृतसर साहिब और दूसरी प्रकाशन ऐजेन्सियों में पंजाबी विश्वविद्यालय,

1 पंजाबी संगीतकार, डॉ. गुरनाम सिंह, पृ–3.

पटियाला का नाम प्रमुख रुप से लिया जाता है। यदि ये कहा जाए कि भारत वर्ष के सभी विश्वविद्यालयों से अधिक मातृ भाषा, विज्ञान, इतिहास, शोध, आत्म कथाओं, जीवनियाँ, व्याख्यान तथा कोष ग्रन्थ लिखने में इस विश्वविद्यालय ने सर्वाधिक योगदान दिया है तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला द्वारा समय–समय पर संगीत कला से सम्बन्धित पत्रिकाओं के विशेष अंक प्रकाशित किए जा रहे हैं और विश्वविद्यालय में आयोजित होने वाले सम्मेलन, संगोष्ठियों आदि में संगीत से सम्बन्धित शोध पत्र पढ़े जाते हैं। पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला के अनेक विद्वानों ने भी संगीत प्रकाशन के क्षेत्र में अमूल्य देन दी है।

पंजाबी संगीतकारों, विद्वानों, चिंतको ने अपने ज्ञान के भण्डार को अपनी मातृ भाषा पंजाबी के साथ–साथ अन्य भाषाओं में प्रकाशित करवा कर, भारतीय संगीत के मूल रूप को आने वाली पीढ़ीयों को सौंपने का कार्य किया है। पंजाबी भाषा में पुस्तकों के प्रकाशन की बात की जाए तो पंजाबी संगीतकारों द्वारा प्रकाशन की शुरुआत अनुवादित पुस्तकों से हुई यानि भारतीय संगीत से सम्बन्धित दूसरे विद्वानों के कार्य को पंजाबी लेखकों द्वारा पंजाबी भाषा में अनुवादित किया गया जैसे संगीत कौमुदी, संगीत शास्त्र विवेचन, संगीत शास्त्र दर्पण आदि। सांगीतिक प्रकाशन में बहुमुल्य योगदान देने वाले लेखकों में मास्टर सुन्दर सिंह, डॉ. भाई चरण सिंह, भाई प्रेम सिंह, भाई वीर सिंह, भाई काहन् सिंह नाभा, ज्ञानी ज्ञान सिंह ऐबटाबाद, बक्शी सिंह आदिल, प्रो. तारा सिंह, पन्ना लाल मदान, भाई अवतार सिंह, भाई गुरचरन सिंह रागी, श्री सोहन सिंह, डॉ. दर्शन सिंह नरुला, प्रिंसिपल शमशेर सिंह करीर, स. गुरप्रताप सिंह गिल, डॉ. सुरिन्द्र कपिला आदि ने गुरमत संगीत, लोक संगीत, सूफी संगीत, भारतीय गायन संगीत और वादन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किया। इसी कार्य को आगे बढ़ाते हुए वर्तमान समय में प्रकाशन कार्य निरंतर जारी है जिसमें डॉ. गुरनाम सिंह, डॉ. यशपाल शर्मा, पदम्–श्री भाई निर्मल सिंह खालसा, डॉ. जागीर सिंह, डॉ. कँवलजीत सिंह, डॉ. अरविन्द शर्मा, डॉ. राजेन्द्र सिंह गिल, डॉ. पंकज माला शर्मा, डॉ. निवेदिता उप्पल आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। इनके अलावा धर्मवीर सिंह नागरा, स. बचितर सिंह, स. गुरदीप सिंह, स. रणजीत सिंह, डॉ. मनमोहन शर्मा, डॉ. जगमोहन शर्मा, डॉ. अलंकार सिंह, डॉ. रविन्द्र कौर, सरवनजीत कौर, डॉ. हरिन्द्र हुंदल और डॉ. निर्मल सिंह, डा. रिशपाल सिंह आदि लेखकों की पुस्तकों ने अपना योगदान दिया है।

पंजाब से बाहर निवास करने वाले पंजाबी संगीतकारों और विद्वानों में डॉ.प्रेम लता शर्मा, डॉ.अजीत सिंह पैंतल, डॉ. गीता पैंतल, डॉ.अनुपम महाजन, स. तेजपाल सिंह (सिंह बन्धु), स. बलबीर सिंह कँवल आदि के नाम उल्लेखनीय हैं, जिन्होंने पंजाबी, हिन्दी व अंग्रेजी में प्रकाशन कार्य किया।

पंजाबी संगीतकारों और विद्वानों की अन्य भाषाओं में प्रकाशन की यदि बात करें तो यह प्रकाशित कार्य पंजाबी भाषाई संगीत प्रकाशन के मुकाबले बहुत कम है जिसमें डॉ. प्रेम लता शर्मा ने संगीत राज, बृहदेशी जैसे ग्रन्थों का अंग्रेज़ी और हिन्दी भाषाओं में अनुवाद किया, डॉ. मनोरमा शर्मा ने संगीत एवं शोध प्रविधि, डॉ. अनुपम महाजन ने Raga In Indian Classical Music, Indian Music and Ustad Mushtaq Ali khan, तेज सिंह टाक ने संगीत जिज्ञासा और समाधान, डॉ. गीता पैंतल ने पंजाब की संगीत परम्परा और पंजाबी भाषा में ख्याल की पारम्परिक बंदिशे, तृप्त कपूर ने उत्तर भारत में संगीत शिक्षा, जोगिन्द्र सिंह बावरा ने भारतीय संगीत की उत्पति एवं विकास और हरिवल्लभ दर्शन, डॉ. गुरनाम सिंह ने पंजाबी संगीतकार हिन्दी, Sikh Musicology, Sikh Sacred Music, गुरमत संगीत राग रत्नावली हिन्दी, डॉ. यशपाल शर्मा ने भारतीय संगीत में श्रुति और गुरुमत संगीत राग रत्नावली, डॉ. निवेदिता उप्पल ने Tradition of Hindustani Music A Sociological Approach, पन्ना लाल मदान ने संगीत कला का इतिहास आदि पुस्तकें अंग्रेजी और हिन्दी भाषाओं में लिखी और प्रकाशित करवाई।

गुरमत संगीत प्रकाशन :–

गुरमत संगीत एक ऐसी आध्यात्मिक गायन विद्या है जो गुरु साहिब द्वारा रचित बाणी का रागबद्ध संगीतिक प्रवाह है जिसका क्रियात्मक प्रवाह गुरु नानक देव जी से प्रारम्भ होकर वर्तमान समय तक निरंतर प्रवाहित हो रहा है। सैद्धांतिक क्षेत्र की बात की जाए तो पंजाबी विद्वानों द्वारा संगीत के प्रकाशित कार्यों की शुरुआत भी गुरमत संगीत प्रकाशनों से ही हुई। 1913 ई. में मास्टर सुन्दर सिंह, जो कि यतीमखाना तरनतारन में संगीत अध्यापक थे, ने 'हारमोनियम कीर्तन शिक्षा' नामक पुस्तक की रचना की जिसे प्रकाशित हुए सौ साल हो चुके हैं। गुरमत संगीत के क्षेत्र में ये पहला सैद्धांतिक कार्य है। गुरमत संगीत प्रकाशनों में डॉ. भाई चरण सिंह (गुरमत संगीत पर मिली हुन तक दी खोज), भाई प्रेम सिंह (गुरगत संगीत रतन भण्डार), मास्टर सुन्दर सिंह (हारमोनियम कीर्तन सिख्या), भाई वीर सिंह (श्री गुरु ग्रन्था साहिब कोष), भाई काहन सिंह नाभा (गुरु शब्द रत्नाकर महान् कोष) आदि प्रमुख विद्वानों की खोज पर आधारित पुस्तकें, लेख, रचनाएँ और विशेष टिप्पणियाँ संगीत प्रकाशन में तीव्रता से प्रकाशित हुई इन सब कार्यों को एकत्रित कर 'गुरमत संगीत पर मिली हुन तक दी खोज' (1958) शीर्षक के अन्तर्गत प्रकाशित किया गया। इस पुस्तक में अनेक ऐसे विषय (राग की तासीर अनुसार शब्द गायन, नौ धुनों को गाने का ढंग) हैं जिनसे सम्बन्धित जानकारी किसी दूसरी समकालीन पुस्तक में नहीं मिलती। ऐसी महत्वपूर्ण रचनाएँ , गुरमत संगीत के स्वतंत्र विषय के रुप में स्थापित होने के लिए मील का पत्थर साबित हुई। उधर संगीत के महत्वपूर्ण विषयों से सम्बन्धित 'गुरुबाणी संगीत' (1961) पुस्तक के रचयिता श्री ज्ञान सिंह ऐबटाबाद है। इस पुस्तक में लेखक ने पुरातन शब्द रीतों को लिपीबद्ध करने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। इसी दौरान, गुरुमत संगीत के क्रियात्मक पक्ष से महत्वपूर्ण पुस्तक ''गुरुबाणी संगीत प्राचीन रीत रत्नावली'' (1979) भाई अवतार सिंह और गुरचरण सिंह द्वारा लिखी हुई। इस पुस्तक गुरुबाणी संगीत के प्राचीन कीर्तनकारों के मौखिक रुप से चली आ रही शब्द रीतों को, पहली बार प्रकाशित किया गया। ये शब्द रीते ध्रुपद अंग से गाई जाती थी। गुरमत संगीत प्रेमियों और शोध कर्ताओं के लिए यह पुस्तक अत्यंत लाभदायक सिद्ध हुई।

सिक्ख इतिहास के महान् लेखक, संगीत शास्त्र, साहित्य और संस्कृति विज्ञान के महान् विद्वान डॉ. देविन्द्र सिंह विद्यार्थी ने , 'शास्त्री संगीत दी परम्परा विच सिक्ख संगीत दा विकास' (1986) नामक पुस्तक को रचना की। इन्हीं की कलम से ही, 'गुरुबाणी दे राग सम्बोध अते सार्थकता' (1986) नामक

पुस्तक का सृजन भी हुआ। इस पुस्तक में राग और गुरुबाणी, भक्ति पदों में राग, गुरुबाणी के रागों का शास्त्रीकरण और भारतीय संगीत के सन्दर्भ में इसका अध्ययन करने का काम, पंजाबी संगीत प्रकाशन में पहली बार किया गया। इस तरह गुरुबाणी संगीत के प्रति शोध की दृष्टि अपना कर, इस क्षेत्र में शोध की शुरुआत हुई। गुरमत संगीत प्रबन्ध का विज्ञान, तर्कपूर्ण अध्ययन और उसकी पुनर् स्थापना के सम्बन्ध में प्रो. तारा सिंह का नाम अद्वितिय है। इन्होंने गुरमत संगीत विधा अनुसार गुरुबाणी को रागबद्व करने का सफल कार्य किया है। इन्होंने गुरुबाणी के कुल 64 रागों और उप–रागों को लिपीबद्ध करके, ''श्री गुरु ग्रन्थ साहिब राग रत्नावली (1991, पंजाबी विश्वविद्यालय , पटियाला) पुस्तक प्रकाशित कर सराहनीय कार्य किया। इनकी, गुरु अंगद देव राग रत्नावली, गुरु अमरदास राग रत्नावली, गुरु रामदास राग रत्नावली, गुरु अर्जुन देव राग रत्नावली, गुरु तेग बहादुर राग रत्नावली, गुरु गोबिन्द सिंह राग रत्नावली, भगत राग रत्नावली, गुरु अमरदास राग रत्नाकर, पड़ताल गायिकी, भगति होत गावै रविदास आदि पुस्तकें गुरुमत संगीत विधा के अनुकूल प्रकाशित हुई हैं।

इस विधा के सैद्धांतिक पक्ष को प्रचारित करते हुए आपके परम शिष्य डॉ. गुरनाम सिंह ने इसी श्रृंखला को आगे बढ़ाते हुए 'गुरमत संगीत प्रबन्ध अते प्रसार' (2000) पुस्तक की रचना की। सन् 2001 में सरदार गुरप्रताप सिंह गिल द्वारा 'गुरमत संगीत विच प्रयुक्त लोक संगीतिक तत' नामक पुस्तक की रचना की गई।

इस प्रकार हम देखते हैं कि गुरमत संगीत विधा से सम्बन्धित प्रकाशन कार्य पिछले दस दशकों से किए जा रहे हैं। गुरमत संगीत के अकादमिक क्षेत्र में स्थापित होने के कारण इसमें सम्बन्धित शोध कार्यों में तीव्रता आई। गुरुमत संगीत के सम्बन्धित मासिकी/त्रै–मासिकी/अर्धमासिकी और वार्षिकी पत्रिकाएं समय–समय पर प्रकाशित होती रही है। जिनमें से अमृत कीर्तन (चण्डीगढ), विस्माद नाद (गुरुद्वारा गुरु ज्ञान प्रकाश जवद्दी कलां), समाजिक विज्ञान पत्र (पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला), गुरुमत संगीत कीर्तन अंक (अमृतसर), गुरुमत प्रकाश (अमृतसर) सिंघ सभा पत्रिका कीर्तन अंक (अमृतसर) आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

लोक संगीत सम्बन्धी प्रकाशन–

पंजाबी लोक संगीत परम्परा भारतीय संगीत में विशेष स्थान रखती हैं। संगीतकारों का विचार है कि ''शास्त्रीय संगीत लोक संगीत से उपजा है।''[2] पंजाबी लोक संगीत से सम्बन्धित पुस्तकें पिछले कुछ वर्षों में ही प्रकाशित हुई है और इस पर ओर विशेष कार्य करने की जरूरत है। पंजाबी लोक संगीत से सम्बन्धित प्रारम्भिक पुस्तकें में से, 'पंजाबी लोक संगीतः सिद्धांत और स्वरूप', (डॉ. गुरनाम सिंह, 1984), 'पंजाबी लोक संगीतः एक अध्ययन' (परमवीर सिंह नागरा, 1985), 'पंजाब के लोक साज' (डॉ. अनिल नस्ला, 1996), 'पंजाब दीयां लोक धुनां' (स. गुरप्रताप सिंह गिल, 2001) आदि प्रमुख हैं।

इसी श्रृंखला को आगे बढ़ाते हुए डॉ. गुरनाम सिंह, डॉ. राजेन्द्र सिंह गिल, शमशेर संधु, डॉ. नाहर सिहं , डॉ. कर्मजीत सिंह, डॉ. अजमेर सिंह, डॉ.जागीर सिंह नूर, डॉ. अरविन्द शर्मा आदि ने पुस्तकों की रचना करके लोक संगीत विरासत को सम्भालने को सार्थक प्रयास किए हैं। नई पीढ़ी के लेखकों में से डॉ. हरिन्दर कौर सोहल, डॉ. निर्मल सिंह, डॉ हरिन्द्र हुन्दल, डॉ. रणजीत सिंह आदि ने इस क्षेत्र में पुस्तक लेखन कर इस श्रृंखला को आगे बढ़ाया है।

शास्त्रीय संगीत से सम्बन्धित प्रकाशन :–

पंजाबी की शास्त्रीय संगीत परम्परा ध्रुपद, ख्याल (पंजाबी बंदिशे), टप्पा, पंजाब अंग की ठुमरी, पंजाब की लोक धुनों से विकसित हुए राग, इन पक्षों से जो हिन्दुस्तानी संगीत को समृद्व करती रही है, परंतु इस योगदान को प्रकाशन में पूरी तरह उभारा नहीं गया। पंजाबी संगीतकार विद्वानों में प्रो. तारा सिंह द्वारा लिखी वादन कला (1972) पुस्तक, पंजाबी भाषाई हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत प्रकाशनों की मौलिक पुस्तकों में से एक हैं। इस पुस्तक से पहले पंजाबी भाषाई संगीतिक पुस्तकें मूल रुप में गुरुमत संगीत विधा के अनुकूल ही प्रकाशित हुई । 1988 में भाषा विभाग पंजाब की ओर से प्रकाशित 'पंजाब दे प्रसिद्ध संगीतकार' नामक पुस्तक प्रो. तारा सिंह की पंजाबियों को अमूल्य सांगीतिक देन है। इस पुस्तक में पहली बार पंजाब के संगीतकारों का जीवन ब्यौरा इक्ट्ठा किया गया। इसी क्रम में आगे चलकर डॉ. गुरनाम सिंह ने पंजाबी संगीतकार (1989) पुस्तक की रचना की।

पंजाब के संगीत विद्वानों द्वारा लिखी हिन्दी भाषाई पुस्तकों में डॉ. गीता पैंतल द्वारा रचित पुस्तक 'पंजाब की संगीत परम्परा' उल्लेखनीय है। साथ ही तेज सिंह टाक की 'संगीत जिज्ञासा और समाधान' 2001, डॉ. यशपाल शर्मा द्वारा रचित 'भारतीय संगीत में श्रुति' 2006, पण्डित हरीश चन्द्र बाली कृत, 'संगीत प्रकाश', (जिसे 1980 में पंजाब यूनिवर्सिटी टैक्स्ट बोर्ड, चण्डीगढ़ द्वारा प्रकाशित किया गया), का नाम विशेष रुप से उल्लेखनीय हैं। इसके बाद 'संगीत ग्रन्थ अते भारतीय संगीत दा इतिहास' नामक पुस्तक, श्रीमती चंद्रकांता खोसला द्वारा तब लिखी गई जब संगीत विषय में पंजाबी भाषाई पुस्तकों की संख्या बहुत कम थी। 1986 में पन्ना लाल मदान की पुस्तक 'पंजाब विच संगीत कला दा निकास अते विकास' प्रकाशित हुई इसके अलावा, कुछ पुस्तकों की रचना निबन्धात्मक रुप में की गई जिनमें से 'उचेरे संगीत निबन्ध' (1984) पुस्तक के लेखक डॉ. दर्शन सिंह नरुला सांगीतिक सामग्री को लिखित रुप देने वाले प्रथम लेखकों में से एक थे। डॉ. विनय कुमार अग्रवाल द्वारा लिखित 'संगीत निबन्ध' (1988), डॉ. गुरनाम सिंह द्वारा 'संगीत निबन्धावली' (1991) का नाम भी उल्लेखनीय है।

1985 में डॉ. दर्शन सिंह नरुला कृत 'राग तुलना', श्रीमती सुरेन्द्र कपिला की 'संगीत रत्नावली', डॉ. यशपाल शर्मा द्वारा रचित 'गायन कला', डॉ. दर्शन सिंह नरुला कृत 'पंजाब दा संगीत विरसा अते विकास', डॉ. गुरनाम सिंह द्वारा लिखी 'गायन बंदिशावली', बलबीर सिंह कँवल द्वारा रचित पुस्तकें, 'पंजाब दे प्रसिद्व रागी रबाबी' और 'पंजाब दे संगीत घराने अते भारती संगीत परम्परा', डॉ. देविन्द्र कौर द्वारा लिखी, 'संगीत दी सिख्या विच मनौवैज्ञानिक सिद्धांता दा उपयोग', डॉ. जोगिन्दर सिंह बावरा की 'संगीत दा अध्यापन', डॉ. देविन्द्र कौर की संस्थागत संगीत सिख्या' आदि कुछ ऐसी पुस्तके हैं जिन्होंने संस्थागत संगीत शिक्षा और शोध की दृष्टि से, पंजाबी भाषाई प्रकाशन कार्य को सुसज्जित किया है।

[2] निबन्ध संगीत, लक्ष्मी नारायण गर्ग, पृ–86–87.

वर्तमान समय में संगीत क्षेत्र में सम्बन्धित पुस्तक लेखन का कार्य बढ़े स्तर पर किया जा रहा है जो कि आज के समय की जरूरज भी है, जिसके प्रभाव से पुस्तकों का एक भण्डार स्थापित हुआ जो निरंतर समृद्ध हो रहा है। अब इससे आगे पंजाब की संगीत परम्परा के अलग–अलग पहलुओं को पंजाबी के अलावा दूसरी राष्ट्रिय व अंतर्राष्ट्रीय भाषाओं में प्रकाशित करने की जरुरत हैं। देखा जाए तो पंजाबी भाषा के अलावा अन्य भाषाई पुस्तकों में पंजाब और पंजाबियों के भारतीय संगीत में योगदान को उभारा नहीं गया है। पंजाबी भाषा में प्रकाशित पुस्तकें पंजाबी पाठकों के लिए तो लाभदायक हो सकती हैं लेकिन पंजाब के संगीत को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहुँचाने के लिए अन्य भाषाओं में पुस्तकों की रचना करनी अति आवश्यक है ताकि पंजाबी संगीतकारों के बहु–पक्षिय योगदान को विश्व स्तर पर लोगों तक पहुँचाया जा सके।

संगीत के सैद्धांतिक पक्ष की यदि बात करें तो बहुत से विषय अभी भी अस्पर्ष हैं जिन पर कोई भी पुस्तक प्रकाशित नहीं हो सकी। सूफी संगीत पर कोई भी मौलिक पुस्तक किसी भी भाषा में नहीं मिलती जबकि ये विधा विश्व स्तर पर प्रसारित हो रही हैं। उल्लेखनीय है कि इस विधा पर विश्वविद्यालयों में शोध कार्यों के साथ–साथ सूफी संगीत विशेष अंक प्रकाशित हो चुके हैं। इस समय उसके सैद्धांतिक और क्रियात्मक पक्ष तथा उसके मूल स्वरुप से लोगों को परीचित करवाना आवश्यक है। समय की जरूरत है कि हम अपनी मूल सांगीतिक विरासत से सम्बन्धित प्रकाशन के लिए पंजाबी के साथ–साथ अंग्रेज़ी व हिन्दी भाषाओं को भी चुनें।

पुस्तक सूची

- अवतार सिंह, गुरचरन सिंह (रागी), गुरुबाणी संगीत प्राचीन रीत रतनावली, पब्लिकेशन बियुरो, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, 1979
- सुंदर सिंह, हारमोनीयम किरतन शिखिया अत्ते तबला गाईढ, भाई चतुर सिंह, जीवन सिंह अमृतसर, 1916
- हरीशचन्द्र बाली, संगीत प्रकाश, पंजाब यूनिवर्सिटी टैकसट बुक बोर्ड, चण्डीगढ़, 1980
- हरिंदर कौर सोहल (डॉ.), पंजाबी गायिकी विभिन्न पासार, गुरु नानक पुस्तमाला, अमृतसर, 2012
- गुरनाम सिंह (डॉ.), पंजाबी संगीतकार, पब्लिकेशन बियुरो, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, 1989
- गुरनाम सिंह (डॉ.), गुरमति संगीत प्रबन्ध अत्ते पासार, पब्लिकेशन बियुरो, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, 2000
- गुरनाम सिंह (डॉ.), पंजाबी लोक संगीत विरासत पब्लिकेशन बियुरो, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, 2005
- गुरनाम सिंह (डॉ.), पंजाब दे प्रसिद्ध लोक साज़, गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी, अमृतसर, 1984
- गुरप्रताप सिंह गिल, पंजाब दीयां लोक धुनां, पब्लिकेशन बियुरो, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, 2001
- चरन सिंह (डॉ.), भाई वीर सिंह, संपादक बलबीर सिंह (डॉ.), गुरमति संगीत पर मिली हुण तक की खोज धर्म प्रचार कमेटी, अमृतसर, 1958
- चद्र कांता खोसला, संगीत ग्रंथ और भारतीय संगीत का इतिहास, पंजाब यूनिवर्सिटी टैकसट बुक बोर्ड, चण्डीगढ़, 1982
- तारा सिंह, सुरजीत कौर, वादन कला, पब्लिकेशन बियुरो, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, 1972
- तारा सिंह (प्रो.), पंजाब के प्रसिद्ध संगीतकार, भाषा विभाग पंजाब, 1983
- दर्शन सिंह नरुला (डॉ.), उचेरे संगीत निबन्ध, लिटरेचर हाऊस, पुतली घर मारकिट, अमृतसर, 1984
- दर्शन सिंह नरुला (डॉ.), पंजाब दा संगीत : विरसा ते विकास, पंजाबी राइटरज़ कोआपरेटिव सोसाइटी, दिल्ली, 1995
- देविन्द्र सिंह विद्यार्थी (डॉ.), गुरबाणी के राग : संबोध अत्ते सारथकता, सिक्ख इतिहास खोज विभाग, खालसा कालज, अमृतसर, 1986
- देविन्द्र कौर (डॉ.), संस्थागत संगीत शिखिया, पब्लिकेशन बियुरो, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, 2013
- देविन्द्र सिंह विद्यार्थी (डॉ.), शास्त्रीय संगीत दी परम्परा विच सिक्ख संगीत दा विकास, धर्म प्रचार कमेटी, अमृतसर, 1986
- धर्मवीर सिंह नागरा, पंजाबी लोक संगीत : एक अध्ययन, संगीत प्रकाशन, पटियाला, 1985
- पन्ना लाल मदान, पंजाब विच संगीत कला दा निकास अत्ते विकास, पब्लिकेशन बियुरो, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, 1986
- बलबीर सिंह कंवल, पंजाब के प्रसिद्ध रागी रबाबी, सिंह ब्रदरज़, 2010
- यशपाल शर्मा (डॉ.), गाइन कला, पब्लिकेशन बियुरो, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, 2001
- राजिन्द्र सिंह गिल (डॉ.), पंजाबी लोक संगीत विभिन्न परिपेख, मास्टर प्रिंटरज, पटियाला, 2005

पत्रिकाएं

- अमृत कीरतन (अमृत कीरतन टरसट, चण्डीगढ)।
- समाजिक विज्ञान पत्रिका (संगीत विशेष अंक) पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला।
- विसमाद नाद (गुरुद्वारा गुर ज्ञान प्रकाश जवदीं कलां, लुधियाना)।
- गुरमति प्रकाश (धर्म प्रचार कमेटी, अमृतसर)।